बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम।।५४।।

जागृत बुद्धि को कुरान में असराफील कहा है। विजियाभिनन्द को कुरान में इमाम मेंहदी कहा है और इस तरह से सब अलग-अलग बोली और अलग-अलग नामों में उलझे हैं।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख।।५५।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वेद और कतेब, अर्थात् सभी पुराण और कुरान साक्षी के ग्रन्थ हैं, परन्तु हिन्दू मुसलमान पढ़ने वालों में ही अन्धकार का ज्ञान भरा है और इसलिए यह दोनों भाषा की लड़ाई लड़ रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६४२ ॥

कंसे काला-गृह में, किए वसुदेव देवकी बन्ध।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध।।१।।

कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी और वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया और राज मद में अन्धे होकर अपने भांजों को मारा।

नूह काफर की बंध में, रहे साल चालीस।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस।।२।।

नूह पैगम्बर काफिरों के बन्ध में चालीस वर्ष तक रहे और उनके बेटों को मारकर बहुत कष्ट दिया फिर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नंद द्वार।।३।।

वेद कहते हैं बैकुण्ठ से चतुर्भुज विष्णु भगवान ने जेल में आकर दर्शन दिया और वसुदेवजी को सिखापन (शिक्षा) दिया कि जो अब बच्चा पैदा होगा, उसे नन्दजी के घर गोकुल में पहुंचा देना, इसलिए बालक श्री कृष्ण को नन्द जी के घर पहुंचा दिया।

मलकूत से फरिस्ता, नूह समझाया आए।
नसीहत कर पीछा फिर्या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए।।४।।

मलकूत से फरिश्ते ने आकर नूह पैगम्बर को सब हकीकत किस्ती आदि के बारे में बताई और नूह पैगम्बर ने नसीहत के मुताबिक श्याम को पहुंचा दिया।

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान।।५।।

अहीर जाति की कौम में नन्दजी और कल्याणजी गांव के मुखिया थे। वहां पर बृज में गोपियों ने श्री कृष्णजी से प्रेम और आनन्द प्राप्त किया। दूसरे लोग उनको नहीं पहचान सके।

महत्तरों की कोम में, जित हूद कील सिरदार।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार।।६।।

महत्तर जाति के घर में हूद और कील मुखिया थे। जबराईल फरिश्ते ने आत्मिक आहार उनको पहुंचाई जो टापू में सहायता के लिए आए।

Nijanand App

खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अव्वल।
उतरीं रूहें फरिस्ते, अरस के असल।।७।।

रात्रि में जो खेल हुआ उसके पहले भाग में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अपने मूल घर से खेल में उतरीं।

सात रात आठ दिन का, सुकें कह्या इन्द्र कोप।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक।।८।।

श्री शुकदेवजी ने सात रात और आठ दिन का इन्द्र कोप का वर्णन किया है। उसी राजा इन्द्र ने हवा, पानी, आग से मृत्युलोक का प्रलय कर देना चाहा।

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकुल।
जल प्रले के फिरवले, अंदर न हुआ दखल।।९।।

तब गोवर्द्धन पर्वत के नीचे श्री कृष्णजी ने गोकुल को बचा लिया। घनघोर बादल प्रलय की वर्षा करके वापस लौट गए, पर एक बूंद भी पानी गोकुल में नहीं गया।

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर।
राखी रूहें कोहतूर तले, डूब मुए काफर।।१०।।

सात रात और आठ दिन तक हूद नबी के घर भयंकर तूफान चलता रहा। वहां कोहतूर पर्वत के नीचे रूहों को बचाया और काफिर डूब गए।

हूद कह्या नंदजीय को, टापू बृज अखंड।
कोहतूर गोवरधन कह्या, न्यारा जो ब्रह्मांड।।११।।

कुरान में जिसे 'हूद' कहा है, भागवत में उसे 'नन्द' जी कहा है। कुरान में जिसे 'टापू' कहा है वह अखण्ड बृज' है। 'कोहतूर' ही गोवर्द्धन पर्वत है। यह भूमि इस ब्रह्माण्ड से अलग है।

जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए।
सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए।।१२।।

योगमाया की नाव बनाई और चालीस जुत्थ (समूह) बारह हजार सखियों को उसमें बिठा लिया। श्री कृष्णजी उस नाव को नित्य वृन्दावन में ले गए जहां रास की लीला खेलकर आनन्द लिया।

समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए।
सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए।।१३।।

नूह पैगम्बर ने किश्ती बनाकर चालीस जुत्थ मोमिनों को चढ़ा लिया। यह श्याम मुहम्मद का नूर है जिन्होंने मोमिनों को नाव में बिठाकर पार पहुंचा दिया।

वेदें कह्या स्याम बृज में, आए नंद के घर।
पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर।।१४।।

वेदों ने कहा श्री कृष्णजी बृज में नंद के घर आए। उसके बाद रास में आए। उस रास की रात्रि का सवेरा नहीं हुआ।

कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और।
फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर।।१५।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना पहले हुई। दूसरी बार योगमाया के ब्रह्माण्ड की रचना हुई और तीसरी बार यह कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना हुई, परन्तु संसार के सभी लोग जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है और उसी ठिकाने खड़ा है।

Nijanand App

पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर।
तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर।। १६ ।।

रात्रि के पहले तकरार के भाग में पहली बार हूद नबी के घर आए। दूसरी बार किश्ती से पार किया और तीसरा यह फजर का ब्रह्माण्ड बना। इनके भेदों के रहस्य को जानने वाले लैल तुल की रात्रि को एक ही रात्रि समझते हैं।

किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए।
स्याम बेटा नूह नबी का, फिर्या किस्ती पार पोहोंचाए।। १७ ।।

नूह पैगम्बर ने तीन सौ हाथ लम्बी और चालीस हाथ चौड़ी किश्ती बनाई और अपने प्यारे चालीस जुत्थों (समूहों), अर्थात् बारह हजार ब्रह्म अंगनाओं को चढ़ा लिया और तब नूह के बेटे श्याम ने किश्ती को पार उतारा।

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान।
मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान।। १८ ।।

कुरान में लिखा है कि उसके बाद नूह नबी के तूफान में सब काफिर डूब गए और मोमिन किश्ती में बैठकर पार चले गए। यहां माया का ब्रह्माण्ड नया बना है।

कह्या वेदें कृष्ण अवतार की, पेहले आए बृज के माहें।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहांए।। १९ ।।

वेदों ने कहा है (भागवत ने कहा है) कि श्री कृष्णजी पहले बृज भूमि में आए (वहां उन्होंने ग्यारह वर्ष बावन दिन लीला की)। उसके बाद एक रात्रि रास की लीला करने वृन्दावन गए। अब यहां तीसरा फजर का, अर्थात् जागनी लीला का ब्रह्माण्ड शुरू हुआ।

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल।
दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल।। २० ।।

नूह नबी के तूफान से पहले दो बार बृज और रास की लीला हुई। दो लीलाओं के बाद में यह तीसरा जागनी का खेल रचा गया।

कहे महमंद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार।
लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार।। २१ ।।

रसूल मुहम्मद कहते हैं कि दुनियां के साल हजार होते हैं तो खुदा का एक दिन होता है। उसके बाद हजार महीने से अधिक समय वाली रात्रि के बाद सवेरा होगा और सब दुनियां को परवरदिगार के दर्शन होंगे।

लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत।
सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत।। २२ ।।

यह रात्रि हजार महीने से अधिक लम्बी बताई है। उसके बाद सवेरा ग्यारहवीं सदी में होगा। इसी को कयामत जाहिर होने का समय कुरान में लिखा है।

ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के मांहें।
ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांए।। २३ ।।

ब्रह्मसृष्टि श्री कृष्णजी के साथ बृज रास में खेली। वही ब्रह्मसृष्टियां जिनका वर्णन आ चुका है, सवेरे के उजाले में प्रीतम श्री प्राणनाथजी के साथ जागनी की लीला खेलने आई हैं।

Nijanand App

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार।
सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार गुजार।। २४ ।।

रूहों को लैल तुल कदर की रात्रि में जो खेल दिखाया उसके तीन हिस्से हो गए। अब श्री महामतिजी तीसरे फजर की लीला की हकीकत बताते हैं।

कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए।
एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए।। २५ ।।

कालमाया और योगमाया की लीला में इन्द्र कोप का प्रलय और बृज से रास में जाते समय नूह तूफान का प्रलय हो गया। यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड फिर से रचा गया है। इस रहस्य को जागृत बुद्धि के बिना कोई जान नहीं सकता।

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान।
प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान।। २६ ।।

एक तूफान हूद नबी के घर, दूसरा किश्ती के ऊपर हुआ। इन प्रलय का ब्यौरा रसूल साहब के कुरान में लिखा है।

पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर।
स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर।। २७ ।।

भागवत में लिखा है कि पहले श्री कृष्ण और बलदाऊजी दोनों भाई खेल में उतरे। इनमें श्री कृष्णजी का स्वरूप ब्रह्म का है जिसने रास की लीला की।

दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम।
स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम।। २८ ।।

नूह नबी के दो बेटों का बयान है। एक श्याम दूसरा हिसाम। इनमें श्याम ने किश्ती के द्वारा मोमिनों को नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर आराम दिया।

हलधर आतम नारायन, जो आया हिन्दुस्तान।
साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान।। २९ ।।

हलधर शेषशायी नारायण के अवतार हैं। हिन्द में विष्णु भगवान आए और श्री कृष्ण के नाम से जाने गए। अपने साथ गीता और भागवत का ज्ञान लाकर दिया।

बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम।
सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम।। ३० ।।

नूह नबी का बेटा हिसाम (विष्णु भगवान श्री कृष्ण रणछोड़जी) हिन्दुस्तान का पूज्य भगवान कहलाया जिसने रास लीला के बाद में हिन्दुस्तान में आकर द्वारिका में राज्य किया।

स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान।
हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान।। ३१ ।।

और रास लीला खेलने के बाद रास वाले श्री कृष्णजी अरब में रसूल साहब बनकर आए। पारब्रह्म का सन्देश कुरान लेकर आए जिसमें परमधाम की हकीकत बताई है। उन्होंने कयामत का दिन नजदीक है, कहकर दुनियां को शरीयत में बांधा।

Nijanand App

सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन।। ३२ ।।

अब जागृत बुद्धि के अवतार इमाम मेंहदी ने श्री प्राणनाथजी के रूप में प्रगट होकर हिन्दू और मुसलमानों से वेद और कतेब छीन लिया, अर्थात् वेद और कतेब के रहस्य (जो छिपी बातें थीं) उसकी हकीकत बताकर, जाहिरी अर्थ को लेकर झगड़ने वालों के झगड़े समाप्त कर दिए और उनके हाथ में कुछ नहीं रहा। बुधजी सबकी अज्ञानता को हटाकर, पारब्रह्म का यकीन, सबों के दिलों में दृढ़ कर देंगे।

बाप फारस रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम।
फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम।। ३३ ।।

कुरान में ईरान, रोम, फ्रांस, और अरब के मालिक के रूप में श्याम का नाम आता है। उन्हें अरब में खुदा का सन्देश कुरान लाने के कारण 'रसूल मुहम्मद' कहा गया।

वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुध जी।
खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी।। ३४ ।।

वेद और कतेब (हिन्दुओं और मुसलमानों से) बुधजी सब छीन लेंगे और उनके छिपे भेदों का रहस्य ब्रह्मसृष्टि के बीच जाहिर करेंगे। जीवों को आवागमन के चक्कर से मुक्ति दिलाएंगे।

ए खिताब महंमद मेंहेदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत।
सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत।। ३५ ।।

कुरान में जिस ईमाम मेंहदी की सिफत का ऐसा वर्णन किया गया है, वही इमाम मेंहदी "श्री प्राणनाथजी" हैं जो आखिरत के समय में अपने रूह मोमिनों के बीच सभी धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोलेंगे।

अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत।
इन बिध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत।। ३६ ।।

विष्णु भगवान के नीचे सभी देवी-देवता हैं। जितने अवतार हुए हैं वह सब उन्हीं के अंश हैं। वही विष्णु भगवान, अक्षर ब्रह्म के अन्तःकरण सबलिक में अखण्ड श्री कृष्णजी का ध्यान करते हैं। इस तरह से जो वेद में लिखा है वही श्याम, जागृत बुद्धि के रूप में श्री प्राणनाथजी के अन्दर प्रकट हुए हैं।

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम।
ए मुकरर सब महंमद पे, सो महंमद कह्या जो स्याम।। ३७ ।।

कुरान में बहुत सारे पैगम्बरों के नाम की महिमा बताई गई है। वह सभी पैगम्बरों की महानताएं इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के लिए ही निश्चित हैं। रसूल मुहम्मद ने इन्हीं के अन्दर अखण्ड श्री कृष्णजी श्यामजी का स्वरूप कहा है।

तीर्थंकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार।
तो बुजरकी इत कहां रही, जो कायम न खोले द्वार।। ३८ ।।

बड़े-बड़े तीर्थंकर और बड़े-बड़े अवतारी पुरुषों ने पारब्रह्म को खोजा। जब वह अखण्ड दरवाजे ही नहीं खोल पाए तो उनकी महानता कहां रही?

अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध।
तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनंद-बुध।। ३९ ।।

अवतारी पुरुषों ने परमधाम की खबर नहीं दी, इसलिए जब तक विजियाभिनन्द बुधजी, श्री प्राणनाथजी प्रगट नहीं हो गए तब तक अखण्ड पार के दरवाजे बन्द ही रहे।

Nijanand App

सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम।
उमत सबे रानी गई, इनों किन को दिया पैगाम।।४०।।

कुरान में जिन सब पैगम्बरों की महिमा कही गई, उन सबके अनुयायी लोगों को सत न समझ आने के कारण, रद्द कर दिया गया, क्योंकि यह कैसे माना जाए कि पैगम्बरों ने सत का सन्देश दिया था, अर्थात् उनके सन्देश का दुनियां को क्या लाभ हुआ?

लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत।
अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत।।४१।।

कुरान में जिन पैगंमरों की महिमा गाई गई है, उनके द्वारा दी गई सिखापन (शिक्षा) का क्या लाभ हुआ? जबकि आज भी उनको मानने वाले आग, पानी और पत्थर को पूजते हैं।

करी किताबें मनसूख, हुए जमाने रद।
ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद।।४२।।

इसलिए बीते हुए युगों को और पिछली किताबों को रद्द कर दिया गया, क्योंकि रास लीला के बाद जब तक 'वक्त आखिरत' को रूह अल्लाह मलकी मुहम्मद नहीं आ गए, तब तक परमधाम से मोमिन ब्रह्मसृष्टियां आई ही नहीं थीं।

रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास।
ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास।।४३।।

शुकदेवजी और व्यासजी ने रास की रात्रि को बड़ी महिमा वाला बताया। उस रास की रात्रि में ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टियों ने आनन्द-विहार की लीला का अखण्ड आनन्द लिया।

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन।
रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान।।४४।।

रास की रात को मृत्युलोक, स्वर्गलोक, ब्रह्माजी और नारायण की रात्रियों से भी बड़ा कहा गया है। रास रात्रि के सामने इन सबकी रात्रियां छोटी पड़ जाती हैं।

रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए।
फिरत चिरागें इनमें, चांद सूर ए दोए।।४५।।

कुरान में लैल तुल कदर की महिमा वाली रात्रि को बहुत बड़ा कहा है। इसमें चांद सूर्य दो दीपक जलते हुए घूम रहे हैं।

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म।
दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम।।४६।।

बृज, रास और जागनी की तीनों लीलाओं के प्रगट हो जाने से ब्रह्मसृष्टियों को आनन्द प्राप्त हुआ। यह ब्रह्मसृष्टियां सारी दुनियां को मुक्ति देंगी और पारब्रह्म इन्हें अपने चरणों में लेंगे।

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर।
एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर।।४७।।

रात्रि के तीनों भाग में मोमिनों ने जो लीला की है यह बात जब जाहिर हो जाएगी तो सारी दुनियां को रात के बाद फजर का आनन्द प्राप्त होगा और सब एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आ जाएंगे।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईश्वर।
तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर।।४८।।

वेद कहते हैं कि ब्रह्मसृष्टि प्रेम लक्षणा भक्ति वाली होगी। कुमारिका को ईश्वरीसृष्टि कहा है। तीसरी जीवसृष्टि दुनियां की है।

खास रूहें उमत की, और मुतकी दीन इसलाम।
और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम।।४९।।

कुरान में रूहों को खास उम्मत, ईश्वरीसृष्टि को मुतकी (श्रद्धा वाले) और तीसरी जीवसृष्टि को आम खलक कहा गया है।

ब्रह्मसृष्टी अछरातीत से, ईश्वरी सृष्ट अछर से।
जीवसृष्ट बैकुंठ की, ए जो गफलत में।।५०।।

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत से आई है। ईश्वरीसृष्टि अक्षर से आई है। जीवसृष्टि बैकुण्ठ से आई है जो अज्ञानता के कारण आवागमन के चक्कर में भटकती रहती है।

रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती।
और आम खलक तारीक से, सो सब कुंन से मलकूती।।५१।।

कुरान में रूहों की जमात को लाहूत से, फरिश्तों को जबरूत से उतरे हैं लिखा है। आम खलक जो अन्धकार से कुंन कहने से पैदा हुई है, उसका ठिकाना मलकूत है।

बुद्ध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर।।५२।।

वेद के अनुसार बुध निष्कलंक अवतार प्रगट होकर कलियुगी शक्तियों का नाश करेंगे और सबकी आसुरी बुद्धि को मिटाकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से आवागमन का चक्कर छुड़ाकर अखण्ड कर देंगे।

विजिया-अभिनंद- बुध जी, लिखी एही सरत।
ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त।।५३।।

पुराण की भविष्यवाणी के अनुसार विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार अपने समय पर प्रगट होंगे। ब्रह्मसृष्टि जगत में जाहिर होकर सबको मुक्त करेगी।

ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन।
ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन।।५४।।

ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) से सारा एक दीन हो जाएगा। यह शैतान को मार करके सबों को पारब्रह्म के प्रति यकीन दिलाएंगे। दज्जाल को मारने का अर्थ है आसुरी बुद्धि का नाश करना।

चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूंढ़ थके त्रैगुन।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन।।५५।।

ब्रह्मसृष्टि की चरण रज को ब्रह्मा, विष्णु और शंकर ढूंढ़कर थक गए। कई प्रकार की तपस्याएं कीं फिर भी नहीं मिली, ऐसा वेद की वाणी कहती है।

करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत।।५६।।

कुरान में मोमिन उम्मत (आत्माओं) का चौथे आसमान (लाहूत) से आकर चौदह तबकों के जीवों को पाक करके अखण्ड बहिश्त देने का बयान है।

Nijanand App

बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत बिध सब।
बड़ाई ब्रह्मसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब।।५७।।

कुरान में वर्ष, महीना और दिन गिनकर बता दिए हैं। वह ब्रह्मसृष्टि कब किस तरह प्रगट होकर क्या लीला करेगी, स्पष्ट लिखा है। यह सब इन्हीं ब्रह्मसृष्टियों के लिए है जो आज यह लीला कर रही हैं।

साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत।
सिफत उमत मोमिनों, ए जो जाहेर होत आखिरत।।५८।।

कयामत की हकीकत कुरान में वर्ष, महीना और दिनों में लिखी है। उन ब्रह्मात्माओं की महिमा बार-बार गाई है जो वक्त आखिरत में प्रगट होगी।

विजिया-अभिनंद-बुध जी, और नेहकलंक अवतार।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार।।५९।।

विजियाभिनंद बुध निष्कलंक अवतार संसार में प्रगट होकर सबको अखण्ड करेंगे तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी उनके कर्त्तव्यों से मुक्त कर पार पहुंचा देंगे।

महंमद मेंहदी आवसी, और ईसा हजरत।
ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत।।६०।।

प्रत्येक ग्रन्थ में वर्णन है कि ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी आएंगे और सबका हिसाब लेकर सबको अखण्ड बहिश्त देंगे।

अखंड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म।
बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम।।६१।।

विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथजी तारतम वाणी के ज्ञान से अखण्ड परमधाम के आनन्द और पारब्रह्म के सुखों को जाहिर करेंगे तथा सारे संसार के कर्मों को मिटा देंगे, ऐसा लिखा है।

भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक।
काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक।।६२।।

कुरान में लिखे अनुसार श्री प्राणनाथजी की कृपा से बहिश्त क्या है, दोजख क्या है, सब ज्ञान यहीं जाहिर हो जाएगा। वह यहां सबके काजी न्यायाधीश बनकर सबको सच्चा न्याय प्रदान कर एक पारब्रह्म की हकीकत सबको जाहिर कर देंगे।

कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब।
विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब।।६३।।

अक्षर ब्रह्म के द्वारा रचित कई ब्रह्माण्ड ऐसे हो गए और कई बनते रहेंगे, पर यह जागनी की लीला किसी में नहीं हुई और न होगी। इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों ने जागकर खेल देखा है, इसलिए उनकी कृपा से एक नए तरीके का सुख सब में जाहिर होकर फैल जाएगा।

कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबूं न जाहेर उमत।
दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत।।६४।।

कई दुनियां हुई हैं और कई होंगी, पर रूहों की जमात कभी नहीं आई और न आएगी। अब वक्त रोज कयामत के जाहिर होकर चौदह तबकों के जीवों को मुक्ति देंगी।

Nijanand App

रसम करम कांड की, हुती एते दिन।
अब इलम बुधजीयके, दई सबों प्रेम लछन।।६५।।

इतने दिन तक कर्मकाण्ड का नियम चलता रहा। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान ने सबको प्रेम लक्षणा भक्ति दी।

सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन।
महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन।।६६।।

कुरान के अनुसार इतने दिन तक शरीयत की बन्दगी चलती रही। अब मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने इश्क की बन्दगी करनी सिखायी।

पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट।
याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट।।६७।।

तारतम वाणी से बुध निष्कलंक अवतार और ब्रह्मसृष्टियों की पहचान हो गई। जिनकी स्तुति वेद करते हैं और कहते हैं कि आज तक इन आत्माओं के दर्शन किसी को नहीं हुए और न इसकी बाबत किसी ने कुछ ज्ञान दिया।

पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन।
तोरा सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन।।६८।।

कुरान के ज्ञान के अनुसार मुहम्मद रूह अल्लाह और मोमिनों की पहचान हुई। अब सब दुनियां पर इन्हीं का हुकम चलेगा।

तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन।
बृज रास प्रभात को, ए बुध जी को रोसन।।६९।।

वेदों ने बाल, किशोर और बुढ़ापे की लीलाओं की चर्चा की है। बृज, रास और जागनी की लीला बताकर बुधजी ने इस छिपे ज्ञान को जाहिर कर दिया।

ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद।
प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएं भेद।।७०।।

वेद शास्त्रों में ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि की बृज, रास और जागनी की लीला बताकर बुधजी ने इस छिपे ज्ञान को जाहिर कर दिया।

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप।
सो कुरान यों केहेवहीं, सुन्दर रूप अनूप।।७१।।

श्री राजजी महाराज संसार में तन धारण कर तीन स्वरूप में आए। बृज में बाल स्वरूप, रास में किशोर और जागनी में बूढ़ापन। (श्री राजजी महाराज)। कुरान में भी खुदा के सुन्दर स्वरूपों का वर्णन है।

एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन।
सुन्दरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन।।७२।।

पहली बार बृज में बाल स्वरूप में, दूसरी बार रास में किशोर स्वरूप में और तीसरी बार विजियाभिनंद बुध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथजी आए। इस तीसरे स्वरूप में ज्ञान की बढ़ोतरी की सुन्दरता है जो पल-पल बढ़ता जा रहा है।

Nijanand App

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन।
यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन।।७३ ।।

जिस तरह अवस्था बढ़ती है, पहले बालक, फिर किशोर फिर बूढ़ापन, उसी प्रकार जागृत बुद्धि का नूर भी बृज, रास और जागनी एक के ऊपर एक बढ़ा।

ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन।
खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं बार-बार इसलिए कहती हूं कि किसी का संशय बाकी न रहे। अन्तिम स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने पुराण आदि धर्म-ग्रन्थों के छिपे रहस्य को खोला और सबके संशय मिटा दिए।

श्री कृष्णजीएं बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाय स्याम।।७५ ।।

श्री कृष्णजी ने बृज और रास में ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूर्ण की वह श्री कृष्णजी बरारब (अरब) में आकर रसूल मुहम्मद कहलाए और वही पारब्रह्म का फरमान (कुरान) लेकर आए।

चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम।
पांचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम।।७६ ।।

चौथा स्वरूप ईसा रूह अल्लाह (श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी) जो तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की हकीकत लेकर आए। पांचवां स्वरूप जागृत बुद्धि का है जिन्होंने धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य को खोला और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी कहलाए।

ए भी पांच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान।।७७ ।।

इन पांचों स्वरूपों का विवरण कुरान में भी है। जो कुछ भागवत में लिखा है वही कुरान में लिखा है।

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान।
सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान।।७८ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी की यही पहचान होगी कि वह सभी धर्म वालों को उनके ही धर्म-ग्रन्थों से मायने खोलकर समझाएंगे, ऐसा कुरान में लिखा है।

वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन।
एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन।।७९ ।।

वेद कहते हैं कि जागृत बुद्धि केवल श्री प्राणनाथजी के पास है और संसार के सब धर्माचार्यों के पास सपने की बुद्धि है। यही श्री प्राणनाथजी सब संसार के लोगों के संशय मिटाकर त्रिगुण को मुक्ति देंगे।

हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम।।८० ।।

हिन्दू कहते हैं कि पारब्रह्म आएंगे। ऐसी भविष्यवाणी वेदों में लिखी है। वह कहते हैं कि हमारे सारे काम पूरे हो जाएंगे जब हम उनके सामने होंगे।

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम।
लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम।।८१ ।।

मुसलमान कहते हैं कि हमारे खसम आएंगे और कतेब में लिखा है कि हमारे रसूल साहब हमारी सिफारिश कर उनसे मिलवा देंगे।

Nijanand App

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान।
किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान।। ८२ ।।

इंजील (बाइबल) कहती है कि ईसा रूह अल्लाह आएंगे और बहिश्तों की कुंजी उनके हाथ में होगी। वह ईसाइयों को पहले बहिश्त में भेजेंगे।

यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए।
रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए।। ८३ ।।

इस तरह से संसार के लोग आपस में लड़-झगड़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म दो नहीं एक ही है। चाहे कोई कितना भी सिर पटक ले, सारी सृष्टि का स्वामी एक ही है, उसे बदल नहीं सकते।

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत।
ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत।। ८४ ।।

यह सब जाहिरी लोग शोर मचाते हैं, परन्तु अपने ग्रन्थों के भावार्थ नहीं समझते। इन सब धर्मग्रन्थों के रहस्य खोलने की शक्ति इन्हीं इमाम मेंहदी के पास है कोई दूसरा इन रहस्यों को कैसे खोल सकता है?

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम।
सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम।। ८५ ।।

इस तरह से पारब्रह्म के तीन स्वरूप संसार में अलग-अलग नाम से आए और अन्त में ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते सारे छिपे रहस्य जाहिर किए।

सुर असुर अदयाप के, करत लड़ाई दोए।
ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए।। ८६ ।।

हिन्दू और मुसलमान, मोमिन और काफिर दोनों शुरू से आपस में लड़ाई करते थे। इस झगड़े को स्वामी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन मिटा सकता है?

द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर।
साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर।। ८७ ।।

इन दोनों में झगड़ा शुरू से ही चल रहा है और उनकी औलादें भी नकल करती जा रही हैं। बहुत से साधु, सन्त और फकीरों ने इस झगड़े को मिटाने के उपाय किए, परन्तु झगड़ा नहीं मिटा।

कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थंकर।
द्वेष अद्यापी ना मिटया, कई फरिस्ते पैगंमर।। ८८ ।।

कई अवतारी पुरुष, ऋषि, मुनि, तीर्थंकरों ने अपनी शक्ति दिखाई। इसी तरह से मुसलमानों में भी कई फरिश्तों और पैगम्बरों ने साहस किया, किन्तु शुरू से पैदा इस झगड़े को मिटा नहीं सके।

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।। ८९ ।।

अब श्री प्राणनाथजी विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार आखरुल्जमा इमाम मेंहदी इस संसार में तीन कार्य करने आए हैं। वह हिन्दू, मुसलमान और सभी के झगड़े मिटाएंगे और एक पारब्रह्म की पूजा कराएंगे। दूसरा काम हिन्दुओं को वेद और मुसलमानों को कतेब के जाहिर अर्थों में भटकना समाप्त कर हकीकत के रहस्य बताकर सत्य की राह पर चलाना है। तीसरा काम नसली पुत्र बिहारीजी और नजरी पुत्र श्री मेहराज ठाकुर (श्री प्राणनाथजी) के बीच गद्दी का झगड़ा मिटाना। यही तीनों काम उन्होंने पूरे

Nijanand App

कर दिये। जाहिरी गद्दी को बिलकुल बन्द कर दिया जो बिहारीजी के बाद चली ही नहीं और अपना ठिकाना मोमिनों का दिल बताया और सबसे पहले अपने ही आदेश से अपने ही सिंहासन पर श्री कुलजम सरूप साहब का गादी अभिषेक किया।

ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और।
वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर।। ९० ।।

पहले हिन्दू मुसलमानों के झगड़े मिटाए। दूसरा नसली और नजरी बेटों में गादी के झगड़े मिटाए और तीसरा वेद कतेब के जाहिरी अर्थों से छुड़ाकर छिपे रहस्यों को बताकर सत्य का मार्ग दिखाकर संसार में एक रूपता कायम की, अर्थात् निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) एक दीन में लाए।

दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली और नजरी।
भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द पैगंमरी।। ९१ ।।

रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के दो बेटे नसली बिहारीजी और नजरी मेहेराज ठाकुर हुए। इन दोनों में पैगम्बरी गादी (श्री देवचन्द्रजी की गादी) के वास्ते आपस में झगड़ा हुआ।

वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान।
मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान।। ९२ ।।

हिन्दुओं के पास वेद का ज्ञान आया। मुसलमानों के पास कुरान का ज्ञान आया। इन दोनों ने ही धर्म-ग्रन्थों के मूल सार के अर्थों को उलटकर संसार में कई तरह के झगड़े पैदा कर दिए थे।

मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर।
धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त घर।। ९३ ।।

इन सब संसार के लोगों की उपासना के झगड़े तथा पैगम्बरों को मानने वालों से जाहिरी अर्थ छुड़ाकर छिपे (बातूनी) रहस्य बताकर झगड़ा समाप्त किया। इन तीनों बातों के वास्ते श्री प्राणनाथजी आए।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।
मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध।। ९४ ।।

जिसके दिल में जैसा भाव रहा, उसको उसी रूप में श्री प्राणनाथजी मिले। जिसके मन में जैसी भावना थी वैसा ही स्वरूप धारणकर उसकी सब मनोकामना पूर्ण की।

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद।
सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद।। ९५ ।।

अब बुध निष्कलंक अवतार इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी जाहिर हो गए हैं। जो ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि हैं उन्हें घर की सुध देकर अखण्ड सुख दिए और बाकी दुनियां के झूठे प्रचार रद्द कर दिए।

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल।
मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हुते जो बोल।। ९६ ।।

वेद, गीता, भागवत सबके छिपे भेद खोल दिए।

अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान।
ए मायने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान।। ९७ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान के छिपे भेद भी जाहिर कर दिए।

Nijanand App

ए कागद उमत ब्रह्मसृष्ट को, सोभा आई तिन पास।
माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास।। ९८ ।।

यह सब ग्रन्थ मोमिनों की शोभा के वास्ते आये थे। यह शोभा उनको मिली। उन्होंने ही इनके छिपे भेद खोले। दुनियां वाले झूठे प्रचारक देखते रह गए और उन्हें निराश होना पड़ा।

जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत।
सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत।। ९९ ।।

जब श्री राजजी, श्री श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि जाहिर हो गए, तब सब ग्रन्थों के छिपे रहस्य खुल गए तथा सबके संशय मिट गए और ज्ञान का सवेरा हो गया।

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल।। १०० ।।

हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरे से लड़ाई-झगड़ा करते थे। कुरान और भागवत के सब सच्चे रहस्य जाहिर हो गए, तो दोनों मन का मैल मिटाकर इकट्ठे निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में आए।

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।
रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन।। १०१ ।।

अज्ञानता का अन्धकार मिटा व ज्ञान का उजाला हुआ। सारे जगत के मालिक पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी प्रगट हुए। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उनके चरण पकड़ लिए।

हांसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन।
मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन।। १०२ ।।

थोथी बातों का प्रचार करने वालों और लड़ने वालों की बड़ी हंसी हुई। उनको बड़ी जलन हुई। आखिरत में बड़ा भारी मेला हुआ। जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबको सुख मिला।

बिना सुख कोई न रह्या, सब मन काम पूरन।
अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन।। १०३ ।।

सबकी मनोकामना पूरी कर सबको सुख दिए व चौदह लोकों की अज्ञानता मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया।

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुण।
ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुंन।। १०४ ।।

त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के ऊपर जो अहंकार का परदा पड़ा था, श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी से उड़ गया। सबको पहचान हो गई। शून्य, निराकार, निर्गुण, निरंजन यह सब माया के ब्रह्माण्ड हैं।

वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच।
सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच।। १०५ ।।

सबके धर्मग्रन्थ यहीं तक आकर थके पड़े थे। जीवसृष्टि ने सब शास्त्रों को मन-वचन से खोजा, पर अखण्ड घर की प्राप्ति किसी को नहीं हुई।

अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर।
घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर।। १०६ ।।

अक्षरब्रह्म की सत्ता जाहिर हो गई जहां से ईश्वरीसृष्टि व नूरी फरिश्तों की उत्पत्ति है। जबराईल फरिश्ते का ठिकाना अक्षरधाम अखण्ड है जो सदा पारब्रह्म की आज्ञा के अधीन है।

Nijanand App

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस।। १०७ ।।

परमधाम और अक्षरातीत को कुरान में नूर तजल्ला और अर्शे अजीम कहते हैं। यहां पर बड़ी रूह श्री श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का अद्वैत सम्बन्ध है, अर्थात् एक ही तन है और एकदिली है।

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुध जी आए।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए।। १०८ ।।

रसूल मुहम्मद, मलकी मुहम्मद (श्री देवचन्द्रजी) और नूरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) तीनों स्वरूपों के मिलने पर सबके संशय मिट गए और सबको परमधाम की लीला का रहस्य मालूम हो गया।

भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट।। १०९ ।।

जीवसृष्टि जो सपने की है उसको अक्षर की नूरी नजर (योगमाया) में बहिश्तें कायम कर अखण्ड कर दिया।

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईश्वरी कही।
अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही।। ११० ।।

दूसरी सृष्टि जो ईश्वरीसृष्टि है, जिसका घर अक्षरधाम है, उनको भी नित्य अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम।। १११ ।।

ब्रह्मसृष्टियां, जो परमधाम की हैं जिनको कुरान में लाहूती उम्मत कहा है, इनको खेल के सुख दिखाकर इनकी मनोकामनाएं पूरी कीं।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर।। ११२ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मुक्ति दी और इनको अक्षर के अव्याकृत में अखंड किया। मोमिनों ने जागकर के जिस संसार को देखा, वहां के चल-अचल सभी प्राणियों को अखण्ड सुख दिया।

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल।
सो बुधजीएं मारया, जो त्रैलोकी का काल।। ११३ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज बड़े कृपालु हैं। उन्होंने बिना तपस्या, कठोर साधना की करनी के सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान की। श्री प्राणनाथजी (बुधजी) ने तीनों लोक (मृत्यु, स्वर्ग, बैकुण्ठ) अर्थात् चौदह लोकों को अखण्ड कर दिया और सबके जन्म-मरण का चक्कर समाप्त कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत।
मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइये मारफत।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि अब कुरान के यथार्थ ज्ञान को बतलाता हूं। इसके गुझ (गुप्त) छिपे रहस्य खोले बिना परमधाम के मारफत का ज्ञान, अर्थात् पारब्रह्म की पहचान सम्भव नहीं है।

Nijanand App